रिपोर्ट

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच
छात्र एवं युवा प्रकोष्ठ

मुस्लिम छात्र और युवा सम्मेलन
(पंच परिवर्तन' से राष्ट्र निर्माण में छात्रों और युवाओं की भूमिका)



तिथि- 07 जून (रविवार) 2026
स्थान- कांस्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली

मार्गदर्शन

डॉ. इंद्रेश कुमार जी, सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी, आरएसएस

कार्यक्रम अध्यक्ष

प्रो. शाहिद अख्तर, कार्यकारी अध्यक्ष, एनसीएमईआई, संयोजक, एमआरएम

विशिष्ट अतिथि

प्रो. नरेंद्र सिंह, प्राचार्य, जाकिर हुसैन दिल्ली कॉलेज

सम्मानित अतिथि

डॉ. शम्स इकबाल, निदेशक, एनसीपीयूएल
मोहम्मद अफ़ज़ाल, संयोजक, एमआरएम
गिरीश जुयाल, संयोजक, एमआरएम

कांफ्रेंस संयोजक

डॉ. इमरान चौधरी, राष्ट्रीय संयोजक, छात्र एवं युवा प्रकोष्ठ, एमआरएम

मंच संचालन

मोहम्मद साकिब, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच

धन्यवाद ज्ञापन

डॉ. अलीशा चौधरी, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच दिल्ली

रिपोर्ट संकलन

डॉ. शबीना शेख, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच

कार्यक्रम प्रतिवेदन

नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में 07 जून 2026 को आयोजित कार्यक्रम का विधिवत् शुभारंभ हाजी साबरीन साहब द्वारा तिलावत-ए-कुरआन से किया गया। तिलावत के उपरांत उन्होंने उपस्थित अतिथियों का परिचय कराया तथा उन्हें मंचासीन होने हेतु आमंत्रित किया। सभी अतिथियों के मंच पर विराजमान होने के पश्चात परंपरानुसार मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की दुआ डॉ. शबीना शेख द्वारा प्रस्तुत की गई। मोहम्मद फैज़ खान ने देशभक्ति गीत गाकर मंच से सभी प्रतिभागियों का अभिवादन किया।

दुआ के पश्चात कार्यक्रम के संयोजक **डॉ. इमरान चौधरी** ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं परिचय कराते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि मुस्लिम राष्ट्रीय मंच द्वारा आयोजित यह अज़ीम कॉन्फ्रेंस राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य से आयोजित की गई है। उन्होंने बताया कि मुस्लिम राष्ट्रीय मंच का गठन उस समय की आवश्यकता के रूप में सामने आया, जब आतंकवादी गतिविधियों को मुस्लिम समाज से जोड़कर देखा जाने लगा। इस परिस्थिति को लेकर प्रख्यात चिंतक स्वर्गीय मुज़फ्फर हुसैन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक पूज्य के. एस. सुदर्शन तथा मौलाना जमील इलियासी सहित अनेक राष्ट्रीय चिंतकों ने गंभीर मंथन किया। उनका मानना था कि इस्लाम का मूल संदेश अमन, इंसानियत और भाईचारे का है। इसी चिंतन के परिणामस्वरूप 24 दिसंबर 2002 को आयोजित ईद मिलन समारोह में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की स्थापना की गई।

डॉ. चौधरी ने आगे बताया कि वर्ष 2009 में उन्हें मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के छात्र प्रकोष्ठ की जिम्मेदारी सौंपी गई। ग्वालियर में प्रथम अभ्यास वर्ग आयोजित किया गया, जहाँ छात्र प्रकोष्ठ का औपचारिक गठन हुआ। उन्होंने कहा कि माननीय इंद्रेश कुमार जी के मार्गदर्शन में यह छात्र प्रकोष्ठ मुस्लिम समाज के बीच राष्ट्रप्रेम, सामाजिक जागरूकता

तथा कट्टरता के उन्मूलन के लिए सतत कार्य कर रहा है।

डॉ. शम्स इकबाल: कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय परिषद् उर्दू भाषा (NCPUL) के निदेशक श्री शम्स इकबाल ने कहा कि मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में अपने विचार रखने का अवसर मिलना उनके लिए सौभाग्य का विषय है। उन्होंने छात्र प्रकोष्ठ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि 'पंच परिवर्तन' का संदेश लेकर मंच के युवा देश को आत्मनिर्भर, सशक्त और विकसित भारत बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। उन्होंने कहा कि भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवाओं का है और उनके व्यक्तित्व निर्माण तथा सही मार्गदर्शन की जिम्मेदारी हम सभी पर है, जिसे माननीय इंद्रेश कुमार जी के नेतृत्व में प्रभावी रूप से निभाया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पंच परिवर्तन के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, नागरिक कर्तव्य तथा स्वदेशी जीवन शैली जैसे विषय न केवल समाज के उत्थान के लिए आवश्यक हैं, बल्कि विकसित भारत के निर्माण की आधारशिला भी हैं। यदि इन सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा जाए तो एक आदर्श समाज, नगर, ग्राम और राष्ट्र का निर्माण संभव है।

श्री मोहम्मद अफ़ज़ाल: मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक श्री मोहम्मद अफ़ज़ाल ने अपने उद्बोधन की शुरुआत गुरु-वंदना से की। उन्होंने कहा कि यद्यपि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों और युवाओं का है, तथापि हम सभी के मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत माननीय इंद्रेश कुमार जी हमारे बीच उपस्थित हैं। उन्होंने कहा कि गुरु-शिष्य परंपरा भारत की प्राचीन और गौरवशाली परंपरा रही है। एक सच्चा गुरु कभी अपने शिष्यों से उनकी जाति, पंथ अथवा धर्म नहीं पूछता, बल्कि सभी को समान रूप से ज्ञान प्रदान करता है।

उन्होंने कहा कि यदि शिक्षक अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करें तो पंच परिवर्तन का लक्ष्य स्वतः ही साकार हो सकता है। स्वदेशी के विषय में उन्होंने कहा कि

भारत प्राचीन काल से ही आत्मनिर्भर राष्ट्र रहा है और आज आवश्यकता है कि हम अपने देश के उद्योगों, उद्यमों तथा स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करें।

नागरिक कर्तव्यों पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धार्मिक आचरण के साथ-साथ राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि पवित्र कुरआन में स्वच्छता और पाकीज़गी पर विशेष बल दिया गया है तथा हमें इन शिक्षाओं को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए। गौ-संरक्षण के विषय में उन्होंने कहा कि गाय भारतीय संस्कृति और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है तथा इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए समाज को आगे आना चाहिए।

प्रो. नरेंद्र सिंह: कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तथा जाकिर हुसैन कॉलेज के प्राचार्य प्रो. नरेंद्र सिंह ने कहा कि आज का विषय 'पंच परिवर्तन' है तथा हम विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करने और प्रमाण-पत्र वितरण के उद्देश्य से एकत्रित हुए हैं। उन्होंने कहा कि देश का भविष्य आज के युवाओं के हाथों में है, इसलिए उनके व्यक्तित्व निर्माण और नैतिक विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि पंच परिवर्तन विषय पर अनेक लेख, पुस्तिकाएँ और शोध प्रकाशित हो चुके हैं, किंतु जब तक इन सिद्धांतों को व्यवहार और आचरण का हिस्सा नहीं बनाया जाएगा, तब तक उनका वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं होगा। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे जो भी ज्ञान प्राप्त करें, उसे अपने दैनिक जीवन में उतारें और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

श्री गिरीश जुआल: मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक श्री गिरीश जुआल ने अपने संबोधन में कहा कि आज की गोष्ठी का विषय 'पंच परिवर्तन में युवाओं की भूमिका' है। उन्होंने इस्लाम की प्रसिद्ध अवधारणा 'कुन फ़यकून' का उल्लेख करते हुए कहा कि कुटुंब प्रबोधन का मूल भाव भी यही है कि परिवार और समाज में एकता, संवाद और आत्मीयता बनी रहे। उन्होंने कहा कि संकीर्ण सोच के कारण परिवार बिखर रहे हैं और मानवीय संबंध कमजोर हो रहे हैं। आधुनिक तकनीक और मोबाइल फोन का उपयोग

आवश्यक है, किंतु उसका संतुलित प्रयोग भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे परिवार के साथ समय बिताएँ और सामाजिक संबंधों को मजबूत करें।

डॉ. शाहिद अख्तर: मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. शाहिद अख्तर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति उसके युवा होते हैं। वही राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने अपने शिक्षक जीवन और प्रशासनिक अनुभवों का उल्लेख करते हुए कहा कि विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करना समाज और राष्ट्र के विकास का सबसे प्रभावी माध्यम है।

उन्होंने कहा कि हम प्रायः अपनी पहचान धर्म, जाति या समुदाय के आधार पर निर्धारित करते हैं, जबकि हमारी पहली और सबसे महत्वपूर्ण पहचान भारतीय होना है। युवाओं को यह समझना होगा कि उनका जीवन लक्ष्य केवल शिक्षा प्राप्त करना नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार, संवेदनशील और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक बनना भी है।

उन्होंने कहा कि वास्तविक तालीम वही है जो मनुष्य को बेहतर इंसान और सच्चा देशभक्त बनाए। उच्च शिक्षा का कोई अर्थ नहीं यदि उसका उपयोग राष्ट्र और समाज के हित में न हो। उन्होंने कहा कि मुस्लिम राष्ट्रीय मंच का मिशन विकसित, समरस और अखंड भारत के निर्माण का है। जब व्यक्ति स्वयं बेहतर बनेगा, तभी समाज में सद्भाव और समरसता स्थापित होगी।

उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सेवा गतिविधियों का उल्लेख करते हुए कहा कि आपदा और संकट के समय स्वयंसेवक कभी यह नहीं देखते कि पीड़ित व्यक्ति किस जाति, धर्म या समुदाय से संबंधित है। उन्होंने युवाओं से कट्टरता का विरोध करने, देशविरोधी शक्तियों से सावधान रहने तथा समाज में भाईचारे और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का आह्वान किया।

अंत में उन्होंने कहा कि यह हम सभी का सौभाग्य है कि हमें ऐसे दूरदर्शी मार्गदर्शकों

का सान्निध्य प्राप्त है, जो हमें राष्ट्रसेवा, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों के मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं।

राष्ट्रीय एकात्मता, सांस्कृतिक समन्वय, शिक्षा और युवा दायित्व का व्यापक विमर्श

पंच परिवर्तन के विशेष संदर्भ में- माननीय डॉ. इंद्रेश कुमार जी का उद्बोधन

मुस्लिम स्टूडेंट्स एंड यूथ कॉन्फ्रेंस में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक तथा मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के मार्गदर्शक डॉ. इंद्रेश कुमार ने युवाओं, विद्यार्थियों, शिक्षकों और समाज के विभिन्न वर्गों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय एकता, भारतीय संस्कृति, पारिवारिक संस्कार, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रनिर्माण जैसे विषयों पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। अपने संबोधन में उन्होंने बार-बार इस बात पर बल दिया कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में निहित एकता, पारिवारिक मूल्यों और सांस्कृतिक समन्वय की परंपरा में है।

अपने उद्बोधन की शुरुआत करते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि मनुष्य अपने संबंधों का निर्धारण स्वयं नहीं करता। कौन किसी का पुत्र होगा, कौन किसी का भाई होगा और कौन किसी परिवार का सदस्य होगा, यह सब ईश्वर की व्यवस्था का हिस्सा है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उसने मानव संबंधों को केवल सामाजिक व्यवस्था नहीं माना, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक और नैतिक आधार भी प्रदान किया। इसी कारण भारतीय समाज में भाई-बहन, माता-पिता, गुरु-शिष्य और परिवार जैसे संबंधों को अत्यंत सम्मान प्राप्त हुआ है।

उन्होंने कहा कि समाज के निर्माण में संवाद की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवारों में जब बड़े लोग बच्चों को सुनते हैं और बच्चे बड़ों के अनुभवों से सीखते हैं, तभी स्वस्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण होता है। उन्होंने अपने परिवार का उदाहरण देते हुए बताया कि उनके माता-पिता और दादा-दादी बच्चों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते थे। इसी वातावरण ने उनमें भी दूसरों को सुनने और समझने की आदत विकसित की।

अपने बचपन की स्मृतियों को साझा करते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने बताया कि उनके विद्यालय जाने के मार्ग में मंदिर, गुरुद्वारा, आर्य समाज मंदिर तथा एक सूफी संत की दरगाह पड़ती थी। उनकी माता ने उन्हें प्रत्येक धार्मिक स्थल के प्रति सम्मान का भाव रखना सिखाया। माता का संदेश स्पष्ट था कि ईश्वर एक है, यद्यपि लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। कोई उसे वाहे गुरु कहता है, कोई अल्लाह, कोई ईश्वर, कोई परमात्मा और कोई गॉड। इस शिक्षा ने उनके भीतर सर्वधर्म समभाव और समावेशी दृष्टिकोण का निर्माण किया।

उन्होंने कहा कि यही संस्कार आगे चलकर उनके जीवन की दिशा बने। जब वे पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ में अध्ययन कर रहे थे, तब भी उन्होंने चर्च, मस्जिद और अन्य पूजा स्थलों का समान सम्मान किया। उन्होंने कहा कि वास्तविक शिक्षा वह नहीं है जो मनुष्य को अपने और पराए में बाँट दे। वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य को मनुष्यता, सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान का पाठ पढ़ाए।

डॉ. इंद्रेश कुमार ने शिक्षा के उद्देश्य पर विशेष चर्चा करते हुए कहा कि केवल डिग्री प्राप्त कर लेना या रोजगार प्राप्त कर लेना शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करना है। उन्होंने कहा कि समाज में कुछ बच्चों के लिए माता-पिता गर्व का अनुभव करते हैं क्योंकि वे संस्कारी, सहृदय और जिम्मेदार होते हैं, जबकि कुछ बच्चों के व्यवहार से परिवार और समाज दोनों दुखी होते हैं। इसलिए ऐसी शिक्षा आवश्यक है जो व्यक्ति को नेक इंसान बनाए और समाज के लिए उपयोगी बनाए।

उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें दो स्तरों पर उत्कृष्टता प्राप्त करनी चाहिए—पहला, अध्ययन और ज्ञान के क्षेत्र में; दूसरा, चरित्र और व्यवहार के क्षेत्र में। केवल पढ़ा-लिखा व्यक्ति समाज का आदर्श नहीं बन सकता, बल्कि वह व्यक्ति आदर्श बनता है जिसके ज्ञान और चरित्र में संतुलन हो।

राष्ट्रीय एकता के विषय पर बोलते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत की

विविधता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है। उन्होंने उपस्थित युवाओं से पूछा कि क्या भारतीय चेहरे अंग्रेज़, अमेरिकी, अरब, तुर्क, रूसी या चीनी प्रतीत होते हैं। उनका उत्तर स्वयं देते हुए उन्होंने कहा कि सभी चेहरों की पहचान भारतीय है। भाषा, धर्म, क्षेत्र, जाति और सामाजिक पृष्ठभूमि में भिन्नता होने के बावजूद भारतीयों की राष्ट्रीय पहचान एक ही है।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी माता की कोख से जन्म लेता है और प्रत्येक माता अपने बच्चे के लिए विशिष्ट होती है, किंतु राष्ट्रीय स्तर पर सभी भारतीय एक परिवार का हिस्सा हैं। यह ईश्वर की अद्भुत रचना है कि विविधताओं के बीच भी एक साझा राष्ट्रीय पहचान विद्यमान है। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि यदि मनुष्य यह समझ ले कि हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं और एक ही राष्ट्र के नागरिक हैं, तो परिवारों, समाजों और देशों के बीच अनेक संघर्ष स्वतः समाप्त हो सकते हैं।

अपने कश्मीर प्रवास का उल्लेख करते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने बताया कि उन्होंने आतंकवाद के कठिन दौर में लगभग सत्रह वर्षों तक कश्मीर में कार्य किया। उन्होंने उस घटना का भी उल्लेख किया जब उनका अपहरण करने का प्रयास किया गया था, किंतु परिस्थितियों के कारण वह प्रयास सफल नहीं हो पाया। उन्होंने इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए कहा कि जीवन में अनेक कठिन परिस्थितियाँ आती हैं, किंतु यदि व्यक्ति का उद्देश्य समाजहित और राष्ट्रहित हो तो वह चुनौतियों का सामना कर सकता है।

हजरतबल की यात्रा का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने वहाँ अपनी मातृभाषा में प्रार्थना करने की इच्छा व्यक्त की थी। उनका विश्वास था कि ईश्वर किसी विशेष भाषा का नहीं होता और सच्ची श्रद्धा किसी भी भाषा में व्यक्त की जा सकती है। उन्होंने कहा कि आस्था की शक्ति भाषा से नहीं, बल्कि भाव से निर्धारित होती है।

डॉ. इंद्रेश कुमार ने प्रसिद्ध पंक्ति “मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना” का उल्लेख करते हुए कहा कि यदि यह विचार सही है, तो समाज में धार्मिक आधार पर संघर्षों का कोई औचित्य नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत की संस्कृति सदैव

विविधताओं के बीच संवाद, सह-अस्तित्व और सहयोग की समर्थक रही है। उन्होंने उपस्थित लोगों के साथ "सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा" का सामूहिक उच्चारण कराते हुए राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया।

भाषा और संस्कृति के संदर्भ में उन्होंने "माँ के कदमों में जन्नत" वाक्यांश का उल्लेख करते हुए बताया कि इसमें संस्कृत, फ़ारसी और अरबी तीनों भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं। यह उदाहरण भारत की सांस्कृतिक समन्वय परंपरा को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि भाषाएँ मनुष्यों को जोड़ने का माध्यम होनी चाहिए, उन्हें विभाजित करने का नहीं।

कट्टरता और उदारता के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि जब व्यक्ति प्रत्येक विषय पर अड़ियल दृष्टिकोण अपनाता है तो वह समाज में तनाव उत्पन्न करता है। इसके विपरीत, संवाद, सहमति और सहयोग का मार्ग समाज को आगे बढ़ाता है। उन्होंने कहा कि कट्टरता शैतानी प्रवृत्ति को जन्म देती है, जबकि समन्वय और सहिष्णुता मानवता का मार्ग है।

आतंकवाद और पड़ोसी संबंधों पर विचार रखते हुए डॉ. इंद्रेश कुमार ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यदि कोई युवक अपने परिवार से नाराज होकर घर छोड़ देता है तो एक अच्छा पड़ोसी उसे परिवार से पुनः जोड़ने का प्रयास करेगा, जबकि बुरा पड़ोसी उसे हिंसा के लिए उकसाएगा। इसी उदाहरण के माध्यम से उन्होंने बताया कि किसी भी राष्ट्र या समाज का दायित्व शांति, सहयोग और सद्भाव को बढ़ावा देना होना चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के विषय पर बोलते हुए उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस का उल्लेख किया और कहा कि बचपन से उन्हें एक कहावत सिखाई गई थी—"जहाँ होती है सफाई, वहाँ नहीं होती लड़ाई।" उन्होंने कहा कि स्वच्छता केवल भौतिक वातावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक स्वच्छता से भी जुड़ी हुई है। स्वच्छ परिवेश में सकारात्मक सोच, अनुशासन और सामाजिक सद्भाव विकसित होता है। उन्होंने उपस्थित लोगों से स्वच्छ रहने, स्वच्छता बनाए रखने और दूसरों को भी

इसके लिए प्रेरित करने का आग्रह किया।

परिवार प्रबोधन के विषय पर डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि परिवार बच्चों की पहली पाठशाला है। माता-पिता और बुजुर्गों का दायित्व है कि वे समय-समय पर बच्चों के साथ बैठें, उनसे संवाद करें, उन्हें प्रेरक कथाएँ सुनाएँ और जीवन के मूल्यों से परिचित कराएँ। उन्होंने कहा कि उपदेश की अपेक्षा कहानी, संवाद और व्यवहार का प्रभाव अधिक होता है। अच्छे संस्कारों से ही अच्छे नागरिकों का निर्माण संभव है।

सामाजिक समरसता पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि समाज में जाति, भाषा और धर्म की विविधता स्वाभाविक है, किंतु इनके आधार पर भेदभाव, घृणा या संघर्ष नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी समुदायों को एक-दूसरे के त्योहारों, परंपराओं और भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। भारत की शक्ति इसी समरसता और सह-अस्तित्व में निहित है।

युवाओं की भूमिका पर चर्चा करते हुए उन्होंने देशभर में छात्र सम्मेलनों और बौद्धिक संवादों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थियों से अपने-अपने क्षेत्रों में युवाओं के लिए सकारात्मक कार्यक्रम आयोजित करने का आह्वान किया। उनके अनुसार युवाओं को केवल दर्शक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रनिर्माण के सक्रिय सहभागी बनना चाहिए।

स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और आर्थिक राष्ट्रवाद के विषय में डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत आज वैश्विक स्तर पर सम्मान प्राप्त कर रहा है। उन्होंने युवाओं से आग्रह किया कि वे भारतीय उत्पादों का उपयोग करें, देश में निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा दें और आर्थिक आत्मनिर्भरता के राष्ट्रीय अभियान में योगदान दें। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत केवल आर्थिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है।

अपने समापन उद्बोधन में डॉ. इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब शिक्षा के साथ संस्कार, विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण, विविधता के साथ एकता और व्यक्तिगत सफलता के साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलन

स्थापित होगा। उन्होंने उपस्थित युवाओं से राष्ट्रहित, समाजहित और मानवता के मूल्यों को जीवन में अपनाने का आह्वान किया तथा विश्वास व्यक्त किया कि भारत का युवा वर्ग देश को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

युवा प्रतिभा का सम्मान:

कार्यक्रम में 50 प्रतिभावान छात्र जिन्होंने अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया उन्हें मैडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में 300 से ज्यादा मुस्लिम कार्यकर्ता और विद्वतजन शामिल रहे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अलीशा चौधरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय गान के साथ हुआ संचालन, मोहम्मद. साक़िब ने किया। कार्यक्रम के सभी सह-संयोजक डॉ. दानिश कमाल चिश्ती, श्री मोहम्मद साकिब डॉ. रमीज़ा रफ़ी, डॉ. शबीना शेख़, श्री. अबु तालिब, श्री अब्दुर रहमान, श्री अब्दुर रज़्ज़ाक, श्री अमरान तालिब, श्री लुकमान अली, श्री आमिर अहमद, डॉ. वसीम अहमद की सक्रीय भूमिका रही।

इस अवसर की शोभा कई अन्य गणमान्य अतिथियों ने भी बढ़ाई, जिनमें दिल्ली विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के प्रो. मुश्ताक आलम कादरी, प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान और धर्मगुरु मौलाना कौकब मुज्तबा, उलेमा फाउंडेशन के उपाध्यक्ष मुफ्ती ताहिर कासमी, हरियाणा सरकार के एमडीए के पूर्व चेयरमैन श्री खुर्शीद रजाका, श्री अनिल गर्ग, गौ प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक, श्री मोहम्मद फैज खान, लेखक श्री यजुवेंद्र यादव, श्री अबू तालिब, पीजीटी (PGT) कॉमर्स मोटिवेशनल स्पीकर और करियर काउंसलर श्रीमती अस्मा सालेहीन, और दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. केशव पटेल शामिल थे।

इस कांफ्रेंस में प्रतिभागी कई प्रतिष्ठित संस्थानों से आए थे, जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, इग्नू (IGNOU), और साथ ही दिल्ली भर के विभिन्न उर्दू-माध्यम के स्कूल।

कार्यक्रम की मीडिया कवरेज:

दिल्ली के कांस्टीट्यूशन क्लब में छात्र एवं युवा प्रकोष्ठ, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के बैनर तले आयोजित इस कांफ्रेंस को देशभर की हिंदी, अंग्रेज़ी, एवं उर्दू भाषा की प्रमुख प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, व डिजिटल मीडिया ने कवर किया। कुछ प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई ख़बरों के लिंक संलग्न हैं।

1. https://www.pravakta.com/press-release/2026/06/08/youth-awaken-tion-advances-muslim-youth-conference-moves-towards-developed-india-2047-with-the-resolution-of-panch-parivartan/
2. https://www.aninews.in/news/national/general-news/sentiment-awakening-in-youth-of-channelling-education-towards-national-progress-rss-leader-indresh-kumar20260608083311/
3. https://x.com/ANI/status/2063771738907754890
4. https://www.lokmattimes.com/national/sentiment-awakening-in-youth-of-channelling-education-towards-national-progress-rss-leader-indresh-kumar/
5. https://www.muslimrashtriyamanch.com/news/detail/youth-conclaves-and-mrm
6. https://www.facebook.com/watch/?v=826105950364140
7. https://m.dailyhunt.in/news/india/urdu/bharat+express+urdu-epaper-bhexpur/youth+awake+nation+progresses+2047+-newsid-n715264096
8. https://urdu.bharatexpress.com/national/panch-parivartan-and-strengthen-efforts-towards-building-a-progressive-inclusive-and-developed-india-by-2047-adr-239478
9. https://english.bharatexpress.com/india/youth-awake-nation-progresses-muslim-youth-conference-moves-towards-developed-india-2047-with-the-pledge-of-panch-parivartan-five-transformations-

275521

10. https://www.tripurastarnews.com/youth-power-for-viksit-bharat-2047-muslim-students-and-youth-conclave-calls-for-nationwide-movement-through-panch-parivartan/
11. https://deshbandhump.com/post/siksa-ke-satha-sanskara-se-banega-majabuta-rastra-muslima-chatra-aura-yuva-sammelana-mem-bole-indresa-kumara
12. https://www.bhaskarhindi.com/other/shiksha-ke-sath-sanskar-se-banega-majaboot-rashtra-muslim-chhatra-yuva-sammelan-indresh-kumar-1310153
13. https://bharatexpress.com/education/youth-power-for-viksit-bharat-krk-654365
14. https://www.liveaaryaavart.com/2026/06/Youth-muslim-seminar%20.html?m=1

कार्यक्रम की कुछ तस्वीरें












एवं युवा सम्मेलन"
ण में छात्र व युवाओं की सहभागिता"
विशिष्ट अतिथि :
विशिष्ट अतिथि :




"मुस्लिम छात्र एवं युवा सम्मेलन
मुख्य अतिथि :
विशिष्ट अतिथि :




WhatsApp Image 2026-06-07 at 2.51.50 PM.jpeg
मुस्लिम राष्ट्रीय मंच
छात्र एवं युवा प्रकोष्ठ द्वारा
आप सभी सादर आमंत्रित हैं
“ मुस्लिम छात्र एवं युवा सम्मेलन ”
“पंच परिवर्तन से राष्ट्र निर्माण में छात्र व युवाओं की सहभागिता”
मुख्य अतिथि :
अध्यक्षता :
विशिष्ट अतिथि :
विशिष्ट अतिथि :
प्रोफेसर शाहिद अख्तर
चौधरी मोहम्मद इजरा
विधानसभा सदस्य
हरियाणा


Prof. Narendra Singh
Principal, Zakir Husain Delhi college


CONSTITUTION CLUB
ANI


“पंच परिवर्तन से राष्ट्र
CERTIFICATE


“पंच परिवर्तन से राष्ट्र
अध्यक्षता :
अख्तर


Prof.(Dr.) Shahid Akhter
Executive Chairman, NCMEI


मुख्य अतिथि :


मुख्य अतिथि :


की सहभागिता"
विशिष्ट अतिथि :

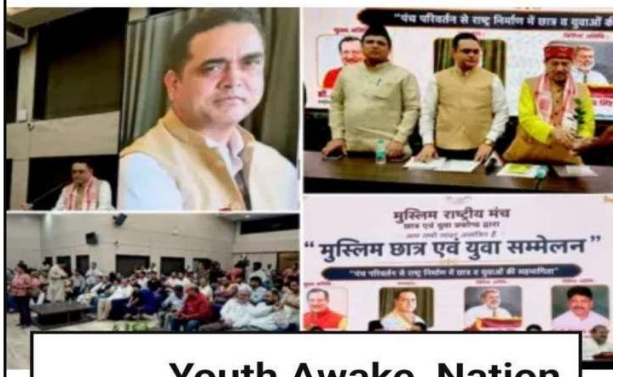


ANI
@ANI

#WATCH | Delhi: Senior RSS leader, Indresh Kumar says, "A gradual transformation is taking place in the country. A sentiment is awakening among the youth that if we channel education towards national progress, we can build a better nation—a better Hindustan. This event conveys a ls for the eradication of hatred; it challenges those who believed that Hindus and Muslims could not coexist, inspiring them instead to come together, live together, and move forward together. Ultimately, the parties that seek to divide and fragment the country will inevitably face defeat one day." (07.06)



Home / News / Bharat Express / Youth Awake, Nation Progresses: ...



Youth Awake, Nation Progresses: نوجوان جاگے، قوم آگے: پنچ پریورتن کے عزم سے ترقی یافتہ بھارت 2047 کی طرف بڑھا مسلم یوتھ کانفرنس

Bharat Express 6 days ago

दैनिक भास्कर
BHASKARHINDI.COM

'शिक्षा के साथ संस्कार से बनेगा मजबूत राष्ट्र,' मुस्लिम छात्र और युवा सम्मेलन में बोले इंद्रेश कुमार



7 June 2026 11:29 PM

आरएसएस की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने 'मुस्लिम राष्ट्रीय मंच' द्वारा आयोजित मुस्लिम छात्र और युवा सम्मेलन में देश-निर्माण में छात्रों और युवाओं की भूमिका पर बात की।



नई दिल्ली, 7 जून 2026: मुस्लिम राष्ट्रीय मंच (MRM) के छात्र एवं युवा प्रकोष्ठ द्वारा आज कॉन्स्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली के स्पीकर हॉल में **"मुस्लिम छात्र एवं युवा सम्मेलन"** का आयोजन किया गया। "पंच परिवर्तन के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में छात्र एवं युवाओं की सहभागिता" विषय पर आधारित इस सम्मेलन ने देश के युवाओं, खासकर मुस्लिम समुदाय के युवाओं को राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा से जोड़ने का एक सशक्त मंच प्रदान किया।

प्रवक्ता कॉम
अभिव्यक्ति का अपना मंच

विविध / युवा जागे, राष्ट्र आगे: पंच परिवर्तन के स

विविध

युवा जागे, राष्ट्र आगे: पंच परिवर्तन के संकल्प से विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ा मुस्लिम युवा सम्मेलन

June 8, 2026 / June 8, 2026 by प्रवक्ता ब्यूरो | Leave a comment



राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

सियासी तक़दीर

नई दिल्ली व मोबाइल से प्रकाशित

SIYASI TAQDEER (DELHI) www.siyasitaqdeer.com

मुस्लिम छात्र एवं युवा सम्मेलन'का आयोजन

'विकसित भारत' का स्वप्न केवल सरकारी नीतियों से पूरा नहीं हो सकता इसके लिए हर नागरिक की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है : डॉ. इन्द्रेश कुमार



ملک کی تعمیر میں مسلم طلبہ اور نوجوانوں کے کردار پر عظیم الشان کانفرنس کا انعقاد



نئی دلی، 09 جون، پریس ریلیز: ہمارا سماج: مسلم راشٹریہ منچ کے طلبہ و نوجوان شعبہ کے زیر اہتمام دارالحکومت نئی دہلی کے کانسٹی ٹیوشن کلب کے آڈیٹوریم ہال میں "مسلم طلبہ و نوجوان کانفرنس" کا شاندار انعقاد عمل میں آیا۔ کانفرنس کا مرکزی موضوع پنچ پریورتن کے ذریعے ملک کی تعمیر میں طلبہ اور نوجوانوں کا کردار تھا۔ اس اہم کانفرنس میں ملک کے مختلف حصوں سے تعلق رکھنے والے طلبہ، نوجوانوں، ماہرین تعلیم، سماجی کارکنان اور دانشوروں نے شرکت کی اور قومی ترقی، سماجی ہم آہنگی اور نوجوان نسل کی ذمہ داریوں پر تفصیلی خیال کیا۔ پروگرام کے مہمان خصوصی راشٹریہ سوئم سیوک سنگھ (آر ایس ایس) کی قومی مجلس عاملہ کے رکن ڈاکٹر اندریش کمار تھے۔ کانفرنس کی صدارت پروفیسر شاہد اختر ایگزیکٹو چیئرمین این سی ایم آئی نے کی، جبکہ پروفیسر نرجند رسنگھ پرنسپل ڈاکٹر حسین دہلی کالج نے بطور مہمان اعزازی شرکت کی۔ ہریانہ کے رکن اسمبلی محمد اسرائیل بھی اس موقع پر موجود رہے اور نوجوانوں کو قومی خدمت اور سماجی ذمہ داریوں کے تئیں بیدار رہنے کا پیغام دیا۔ اپنے خطابات میں مقررین نے اس بات پر زور دیا کہ ملک کی ترقی، قومی یکجہتی اور سماجی استحکام میں نوجوانوں اور طلبہ کا کردار نہایت اہم ہے۔ انہوں نے تعلیم، خود انحصاری، ماحولیاتی تحفظ، سماجی بیداری اور قومی یکجہتی جیسے موضوعات کو وقت کی اہم ضرورت قرار دیا۔ کانفرنس کے دوران نوجوانوں سے اپیل کی گئی کہ وہ تعلیم اور مثبت سوچ کو اپنا ہتھیار بناتے ہوئے ملک و قوم کی خدمت میں فعال کردار ادا کریں اور معاشرے میں بھائی چارے، امن و آشتی اور قومی یکجہتی کو فروغ دیں۔ اس موقع پر مسلم راشٹریہ منچ کے طلبہ و نوجوان شعبہ کے قومی کنوینر ڈاکٹر عمران چودھری سمیت متعدد معزز شخصیات، دانشوران اور سماجی کارکنان بھی موجود تھے۔ پروگرام کا اختتام ملک کی ترقی، سماجی ہم آہنگی اور نوجوانوں کے بااختیار مستقبل کے عزم کے ساتھ ہوا۔





نئی دہلی، 7 جون 2026: مسلم راشٹریہ منچ (MRM) کے طلبہ ویوتھ ونگ کی طرف سے کانسٹی ٹیوشن کلب آف انڈیا، نئی دہلی کے اسپیکر ہال میں ''مسلم طالب علم ویوتھ کانفرنس'' کا انعقاد کیا گیا۔ ''منچ پریورتن کے ذریعے قوم کی تعمیر میں طلبہ و نوجوانوں کی شرکت'' کے موضوع پر مبنی اس کانفرنس نے ملک کے نوجوانوں، خاص کر مسلم برادری کے نوجوانوں کو قوم کی تعمیر کے مرکزی دھارے سے منسلک کرنے کا ایک مضبوط پلیٹ فارم مہیا کیا۔


युवा जागे, राष्ट्र आगे: पंच परिवर्तन के संकल्प से विकसित
भारत 2047 की ओर बढ़ा मुस्लिम युवा सम्मेलन

The Student and Youth Wing of the Muslim Rashtriya Manch (MRM) organised the Muslim Student and Youth Conference at the Constitution Club of India in New Delhi.

The event centred on the theme of youth participation in nation-building through Panch Parivartan and attracted students, educators, intellectuals, and youth representatives from across the





NATIONAL

Youth Power For Viksit Bharat 2047 : Muslim Students And Youth Conclave Calls For Nationwide Movement



New Delhi, June 7: The "Muslim Student and Youth Conference 2026," organized by the Student and Madrasa Cell of the Muslim Rashtriya Manch in the Speaker's Hall of the Constitution Club of India, New Delhi, served as a platform for significant national debate on the role of youth in nation-building. Students, academics, intellectuals, social activists, policymakers, and youth representatives from various states of the country held extensive discussions on the topic of "Student and Youth Participation in Nation-Building through Five Changes." The conference emphasized that the dream of a developed India by 2047 will only be realized when the youth of the country embrace



Post By Muslim Rashtriya Manch

"युवा जागे, राष्ट्र आगे": पंच परिवर्तन के संकल्प से विकसित भारत 2047 की ओर बढ़ा मुस्लिम युवा सम्मेलन

शिक्षा, संस्कार, समरसता और स्वावलंबन का संदेश; डॉ. इन्द्रेश कुमार ने युवाओं को बनाया राष्ट्र निर्माण का अग्रदूत, मेधावी विद्यार्थियों का हुआ सम्मान। देशभर से आए

پنچ پریورتن سے بھارت کی تعمیر

پنچ پریورتن کا مطلب ہے: معاشرے اور قوم کی ترقی کے لیے پانچ اہم شعبوں میں مثبت تبدیلی لانا۔

1. سماجی ہم آہنگی (Social Harmony)

مطلب: معاشرے میں تمام ذات، مذہب، زبان اور طبقے کے لوگوں کے درمیان محبت، احترام اور بھائی چارے کو فروغ دینا۔

تشریح: جب معاشرے میں امتیاز کم ہو گا اور سب لوگ مل جل کر زندگی گزاریں گے، تو قوم زیادہ مضبوط اور مستحکم بنے گی۔

2. ماحولیات (Environment)

مطلب: فطرت، پانی، جنگلات اور زمین کا تحفظ کرنا۔

تشریح: صاف اور صحت مند ماحول، اچھی زندگی اور آنے والی نسلوں کے محفوظ مستقبل کے لیے نہایت ضروری ہے۔

3. سودیشی / خود انحصاری (Self-Reliance through Indigenous Products)

مطلب: ملک میں تیار ہونے والی مصنوعات، ٹیکنالوجی اور صنعتوں کو فروغ دینا۔

تشریح: سودیشی اپنانے سے ملک کی معیشت مضبوط ہوتی ہے اور روزگار کے مواقع میں اضافہ ہوتا ہے۔

4. شہری ذمہ داریاں (Civic Responsibility)

مطلب: ایک ذمہ دار شہری کی حیثیت سے اپنے فرائض ادا کرنا۔

تشریح: قانون کی پابندی کرنا، ووٹ دینا، صفائی برقرار رکھنا اور معاشرے کے تئیں اپنی ذمہ داری نبھانا شہری فرائض میں شامل ہیں۔

5. خاندانی شعور اور اقدار (Family Awareness and Values)

مطلب: خاندان میں اچھی تربیت، اخلاقی اقدار اور باہمی تعاون کو فروغ دینا۔

تشریح: مضبوط خاندان ہی مضبوط معاشرے اور قوم کی بنیاد ہوتے ہیں۔

نتیجہ

پنچ پریورتن کا پیغام یہ ہے کہ اگر ہم سماجی ہم آہنگی، ماحولیات کے تحفظ، سودیشی، شہری ذمہ داریوں اور خاندانی شعور کو اپنی زندگی میں اپنالیں، تو ایک مضبوط، خوشحال اور خود کفیل بھارت کی تعمیر ممکن ہے۔

पंच परिवर्तन से भारत निर्माण

पंच परिवर्तन का अर्थ है – समाज और राष्ट्र के विकास के लिए पाँच महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाना।

1. सामाजिक समरसता (Social Harmony)

अर्थ: समाज में सभी जाति, धर्म, भाषा और वर्गों के लोगों के बीच प्रेम, सम्मान और भाईचारा बढ़ाना।

व्याख्या: जब समाज में भेदभाव कम होगा और सभी लोग मिल-जुलकर रहेंगे, तब राष्ट्र अधिक मजबूत बनेगा।

2. पर्यावरण (Environment)

अर्थ: प्रकृति, जल, जंगल और भूमि की रक्षा करना।

व्याख्या: स्वच्छ पर्यावरण स्वस्थ जीवन और आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए आवश्यक है।

3. स्वदेशी (Self -Reliance through Indigenous Products)

अर्थ: देश में बने उत्पादों, तकनीकों और उद्योगों को बढ़ावा देना।

व्याख्या: स्वदेशी अपनाने से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है और रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

4. नागरिक कर्तव्य (Civic Responsibility)

अर्थ: एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करना।

व्याख्या: कानून का पालन करना, मतदान करना, स्वच्छता बनाए रखना और समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाना नागरिक कर्तव्य हैं।

5. कुटुंब प्रबोधन (Family Awareness and Values)

अर्थ: परिवार में अच्छे संस्कार, नैतिक मूल्य और आपसी सहयोग को बढ़ावा देना।

व्याख्या: मजबूत परिवार ही मजबूत समाज और राष्ट्र की नींव होते हैं।

निष्कर्ष :

पंच परिवर्तन का संदेश है कि यदि हम सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी, नागरिक कर्तव्य और कुटुंब प्रबोधन को अपने जीवन में अपनाएँ, तो एक सशक्त, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण संभव है।